ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६६
दिनांक- शुक्रवार, १८ सितम्बर, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३२.६ एवं २६.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ६४ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ८० प्रतिशत, हवा की औसत गति ६.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन २.३ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २६.० एवं दोपहर में ३३.७ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में १५.४ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१६-२३ सितम्बर, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १६-२३ सितम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में १६ सितम्बर के सुबह तक तराई एवं मैदानी जिलों के अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने का अनुमान है। उसके बाद के दिनों में अधिकतर स्थानों पर मौसम शुष्क रह सकता है। हलांकि एक-दो स्थानों पर हल्की या छिट-पुट वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३५ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २५-२६ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पुरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ८-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- विगत सप्ताह में उत्तर बिहार में हल्की से मध्यम बर्षा हुई है। फिलहॉल अगले १२-२४ घंटों के दौरान अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम बर्षा होने की संभावना को देखते हुए किसान भाई इस अवधि में कीटनाशी दवाओं का छिड़काव स्थगित रखें। कीटनाशी दवाओं का छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। धान, मक्का, खरीफ प्याज, चारा एवं अन्य सब्जियों की फसलों में आवश्यकतानुसार नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों प्रारंभ में धान की कोमल पत्तियों तथा तनों का रस चूसते हैं जिससे पत्तियॉ पीली होकर कमजोर हो जाती है तथा पौधों की बढ़वार बाधित हो जाती है और वे छोटे रह जाते है। जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल १० प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर १०-१५ किलोग्राम की दर से भूरकाव ८ बजे सुबह से पहले अथवा ५ बजे शाम के बाद बालियों पर करें। खतों के आस-पास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव अवश्य करें।
- लत्तीदार वाली सब्जियों की फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरट का रुप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा-मेढ़ा, कभी-कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते है। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदककर दुसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नही रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इकृठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करे। अधिक क्षति होने पर १ किलोंग्राम छोआ एवं २ लीटर मैलाथियान ५० ई०सी० तरल दवा को ८०० से १००० लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रुप से छिड़काव करे।
- मिर्च की फसल में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे, तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं में बरसात के अन्त में यकृत कृमि (लिवर फ्लुक) एवं एम्फीस्टोम का संक्रमण खासकर नदी, तालाब या बाढ़ के पानी से संक्रमित चारा खाने से बहुत अधिक होता है। इससे वचाव के लिए ऑक्सीक्लोजानाईड एवं लिबामिजोल १०० मि०ली० खाली पेट पशुओं को अवश्य पिलायें।
- बरसात के दिनों में परती खेतो एवं खेतो के मेड़ पर अत्यधिक दुब, मोथा, घास वाली जंगल उग आते है, जिसमें कीट-व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते है। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस-पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधे की शाखाओं को खाकर अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दवा ग्लाइफोसेट ४१ : एस०एल० का १०-१५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर कड़ी धूप के वक्त छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए साफ पानी का प्रयोग करें। छिड़काव के बाद छिड़काव वाले यंत्र की सफाई अवश्य कर लें। इस दवा को किसी भी खड़ी फसल में छिड़काव कदापि नहीं करे।
- मिर्च, बैगन, टमाटर वाली सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है जिससे पौध के पत्ते टेढ़े-मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते है। यह बड़ी तेजी से एक-पौधें से दुसरे पौधे में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः ३१.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.४ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः २६.४ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.३ डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी